

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 12-04-2025

विषय सूची

प्रशांत महासागर में तटस्थ स्थितियाँ बनी रहेंगी: अमेरिकी मौसम निगरानीकर्ता
भारत में प्लास्टिक पार्क

वैश्विक मूल्य भूंखलाओं में भारत की भागीदारी को सशक्त बनाने संबंधी रिपोर्ट

भारत ने बांग्लादेश के नियति के लिए ट्रांसशिपमेंट समाप्त किया

भारतीय रेशम का जादू

नक्सलमुक्त भारत अभियान: रेड जोन से विकास गलियारों तक

संक्षिप्त समाचार

नवकार महामंत्र दिवस

डी.आर. कंगो

ओडिशा एकीकृत स्वास्थ्य बीमा योजना प्रारंभ करेगा

मॉरीशस ने ISA के देश साझेदारी ढाँचे पर हस्ताक्षर किए

पूँजी निवेश योजना के लिए राज्यों को विशेष सहायता

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक(IIP)

कवच 5.0 प्रणाली

'गौरव' (बम)

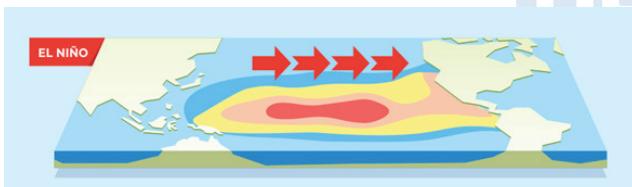
मालाबार ग्रे हॉर्नबिल (ओसीसेरोस ग्रिसियस)

प्रशांत महासागर में तटस्थ स्थितियाँ बनी रहेंगी: अमेरिकी मौसम निगरानीकर्ता सन्दर्भ

- हाल ही में, राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन ने पूर्वानुमान लगाया है कि अक्टूबर 2025 तक प्रशांत महासागर में तटस्थ स्थितियाँ प्रभावी रहेंगी।
 - यह एल निनो या ला नीना घटना की अनुपस्थिति को उजागर करता है, जिसे सामूहिक रूप से एल निनो-दक्षिणी दोलन के रूप में जाना जाता है।

एल निनो-दक्षिणी दोलन के बारे में (ENSO)

- यह भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में महासागर और वायुमंडल के बीच परस्पर क्रिया से उत्पन्न होने वाली एक प्राकृतिक रूप से होने वाली जलवायु घटना है। इसके तीन अलग-अलग चरण हैं:
- एल निनो:** यह मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के तापमान के बढ़ने से जुड़ा एक प्राकृतिक रूप से होने वाला जलवायु पैटर्न है।
 - यह दो से सात वर्ष के अंतराल पर अनियमित रूप से घटित होता है।



- ला नीना:** यह मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में औसत समुद्री सतह के तापमान से अधिक ठंडा होने की विशेषता है।
 - ला नीना घटनाओं के दौरान, व्यापारिक पवर्नों सामान्य से भी अधिक तीव्र होती हैं, जो एशिया की ओर अधिक उष्ण जल को ले जाती हैं।



- तटस्थ:** न तो एल निनो और न ही ला नीना की स्थिति प्रभावी होती है।
 - तटस्थ स्थिति तब होती है जब भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह का तापमान दीर्घकालिक औसत के निकट रहता है।

ENSO के प्रमुख घटक		
एल निनो	ला नीना	दक्षिणी दोलन
• ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और भारत में वर्षा को रोकता है।	• दक्षिण एशिया में मानसून को मजबूत बनाता है।	• ENSO के वायुमंडलीय घटक को संदर्भित करता है।
• दक्षिणी अमेरिका और पेरू में वर्षा और बाढ़ को बढ़ाता है।	• अमेरिका के दक्षिण-पश्चिम में सूखा लाता है।	• दक्षिणी दोलन सूचकांक (SOI) के माध्यम से मापा जाता है।
• सामान्यतः भारतीय मानसून को कमजोर करता है और अटलांटिक में तूफान की गतिविधि में वृद्धि का प्रशांत महासागर में तूफान की गतिविधि को बढ़ाता है।	• अटलांटिक तूफान की गतिविधि में वृद्धि का कारण बनता है।	• अलांकारिक बीच दबाव के अंतर को ट्रैक करता है।

हाल की प्रवृत्ति

- NOAA की रिपोर्ट बताती है कि इस वर्ष के आरंभ में देखा गया छोटा और क्षीण ला नीना अब तटस्थ स्थितियों में बदल गया है।
- प्रशांत महासागर में सतह के नीचे का तापमान सामान्य हो गया है, जो ला नीना के अंत का संकेत है।

वैश्विक मौसम पर प्रभाव

- वैश्विक निहितार्थ:** तटस्थ स्थितियाँ एल निनो या ला नीना से जुड़ी चरम मौसम की घटनाओं, जैसे सूखा या बाढ़ की संभावना को कम करती हैं।
 - हालांकि, अन्य जलवायु कारकों के कारण स्थानीय मौसम संबंधी विसंगतियाँ अभी भी हो सकती हैं।
- भारत का दक्षिण-पश्चिमी मानसून:** ENSO-तटस्थ स्थितियाँ सामान्यतः भारत के मानसून के मौसम के दौरान सामान्य या सामान्य से अधिक वर्षा से जुड़ी होती हैं।
 - यह कृषि के लिए एक सकारात्मक विकास है, क्योंकि भारत की लगभग 70% वार्षिक वर्षा जून और सितंबर के बीच होती है।

ENSO का वैश्विक प्रभाव		
क्षेत्र	एल नीनो प्रभाव	ला नीना प्रभाव
भारत	• क्षीण मानसून, सूखा	• मजबूत मानसून, बाढ़
संयुक्त राज्य अमेरिका	• दक्षिण में अधिक नमी, उत्तर में अधिक सूखा	• दक्षिण शुष्क, उत्तर ठंडा
दक्षिण अमेरिका	• भारी वर्षा और बाढ़ (पेरू, इक्वेडोर)	• शुष्क पश्चिमी तट
अफ्रीका	• दक्षिणी अफ्रीका में सूखा	• पूर्वी अफ्रीका के कुछ हिस्सों में बाढ़
ऑस्ट्रेलिया	• सूखा और बनामि	• ठंडा, नम मौसम

भविष्य का दृष्टिकोण

- पूर्वानुमान सटीकता:** NOAA ने अगस्त-अक्टूबर 2025 तक ENSO-तटस्थ स्थितियों के बने रहने की 50% संभावना का अनुमान लगाया है।
 - IMD द्वारा इन निष्कर्षों को शामिल करते हुए जल्द ही मानसून के मौसम के लिए अपना दीर्घावधि पूर्वानुमान जारी करने की संभावना है।
- ENSO की निगरानी:** एल नीनो या ला नीना की ओर किसी भी बदलाव का जल्द पता लगाने के लिए समुद्री सतह के तापमान और वायुमंडलीय पैटर्न की निरंतर निगरानी आवश्यक है।

Source: IE

भारत में प्लास्टिक पार्क

समाचार में

प्लास्टिक पार्क योजना भारत के प्लास्टिक क्षेत्र में औद्योगिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा दे रही है।

प्लास्टिक पार्क

- यह प्लास्टिक से संबंधित व्यवसायों और उद्योगों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया एक औद्योगिक क्षेत्र है।

- इसका उद्देश्य प्लास्टिक प्रसंस्करण उद्योग की क्षमताओं को एकीकृत और समन्वित करना है, निवेश, उत्पादन एवं निर्यात को प्रोत्साहित करते हुए रोजगार उत्पन्न करना है।
- ये पार्क क्षेत्रों के प्रबंधन और पुनर्चक्रण पहलों के माध्यम से पर्यावरणीय रूप से स्थायी विकास प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं।

महत्व और प्रगति

- प्लास्टिक पार्क भारत की प्लास्टिक क्षेत्रों के प्रबंधन, पुनर्चक्रण को बढ़ावा देने और रासायनिक उद्योग का समर्थन करने की रणनीति का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं।
- भारत प्लास्टिक निर्यात में वैश्विक स्तर पर 12वें स्थान पर है, जिसमें निर्यात 2014 में \$8.2 बिलियन से बढ़कर 2022 में \$27 बिलियन हो गया है, जो प्लास्टिक पार्क योजना जैसी सरकारी पहलों के द्वारा संचालित है।
- अब तक विभिन्न राज्यों में 10 प्लास्टिक पार्कों को मंजूरी प्रदान की गई है।



वर्तमान मुद्दे

- भारतीय प्लास्टिक उद्योग बड़ा था लेकिन अत्यधिक खंडित, जिसमें छोटे, मध्यम और सूक्ष्म इकाइयों का प्रभुत्व था, जिससे यह अवसर को भुनाने की क्षमता में कमी रखता था।

सरकारी प्रयास

- विभाग एक योजना को लागू कर रहा है जो आवश्यकतानुसार प्लास्टिक पार्क स्थापित करने का

समर्थन करती है, जिसमें उन्नत बुनियादी ढाँचे और क्लस्टर विकास दृष्टिकोण के माध्यम से सामान्य सुविधाओं को सक्षम बनाया जाता है।

- इस योजना का उद्देश्य प्लास्टिक क्षेत्र में निवेश, उत्पादन और निर्यात को बढ़ाना है।
- इस योजना के अंतर्गत, भारत सरकार परियोजना लागत का 50% तक अनुदान प्रदान करती है, जो प्रति परियोजना ₹40 करोड़ की सीमा के अधीन है।

निष्कर्ष

- प्लास्टिक पार्क की अवधारणा भारत में प्लास्टिक प्रसंस्करण के बुनियादी ढाँचे में सुधार करने के लिए एक क्रांतिकारी पहल है।
- प्लास्टिक पार्क योजना भारत के प्लास्टिक उद्योग को उत्पादन, निर्यात और नवाचार को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्थायी और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार विकास सुनिश्चित करने के लिए एक रणनीतिक पहल है।
- जैसे-जैसे भारत का वैश्विक प्लास्टिक व्यापार में उपस्थिति बढ़ रही है, यह योजना इस वृद्धि को स्थायी, समावेशी और नवाचार-संचालित सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण बनी हुई है।

Source: PIB

वैश्विक मूल्य शृंखलाओं में भारत की भागीदारी को सशक्त बनाने संबंधी रिपोर्ट

संदर्भ

- नीति आयोग ने आज एक रिपोर्ट जारी की जिसका शीर्षक है “ऑटोमोटिव इंडस्ट्री: ग्लोबल वैल्यू चेन में भारत की भागीदारी को शक्ति देना।”

परिचय

- यह रिपोर्ट भारत के ऑटोमोटिव सेक्टर का व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है। यह अवसरों और चुनौतियों को प्रकट करती है तथा भारत को वैश्विक ऑटोमोटिव बाजारों में एक प्रमुख अभिकर्ता के रूप में स्थापित करने के लिए एक मार्ग की रूपरेखा प्रस्तुत करती है।

मुख्य विशेषताएँ

- वैश्विक संदर्भ और प्रवृत्ति: बैटरी निर्माण केंद्र जैसे यूरोप और अमेरिका में उभर रहे हैं, जो पारंपरिक आपूर्ति

शृंखलाओं को बदल रहे हैं और सहयोग के नए अवसर उत्पन्न कर रहे हैं।

- इंडस्ट्री 4.0 का प्रभाव:** यह ऑटोमोटिव निर्माण को बदल रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग (ML), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), और रोबोटिक्स जैसी तकनीकें नए बिजनेस मॉडल को उत्पन्न कर रही हैं, जो स्मार्ट फैक्टरियों और कनेक्टेड वाहनों पर आधारित हैं।
- सेमीकंडक्टर चिप लागत:** प्रति वाहन लागत \$600 से \$1200 तक बढ़ने की संभावना है।
- वैश्विक ऑटो घटक बाजार:** 2022 में \$2 ट्रिलियन का मूल्यांकन; \$700 बिलियन का वैश्विक व्यापार।
- वैश्विक ऑटोमोबाइल उत्पादन:** लगभग 94 मिलियन इकाईयों तक पहुँचा।
- भारत की स्थिति:** भारत चीन, अमेरिका और जापान के बाद चौथा सबसे बड़ा वैश्विक निर्माता बनकर उभरा है, वार्षिक उत्पादन लगभग 47 मिलियन वाहन।
- भारतीय ऑटोमोटिव सेक्टर:** ने छोटे कार और यूटिलिटी वाहन खंडों में मजबूत घरेलू एवं निर्यात बाजार प्राप्त किया है।
- भारत ‘मेक इन इंडिया’ पहल के साथ ऑटोमोटिव निर्माण और निर्यात केंद्र के रूप में स्वयं को स्थापित कर रहा है।**

चुनौतियाँ

- कम हिस्सेदारी:** वैश्विक ऑटोमोटिव घटक व्यापार में भारत का हिस्सा लगभग 3% है, जो लगभग \$20 बिलियन के बराबर है।
- कम हिस्सेदारी उच्च-स्टीक खंडों में:** इंजन घटक, ड्राइव ट्रांसमिशन, और स्टीयरिंग सिस्टम जैसे क्षेत्रों में भारत की हिस्सेदारी केवल 2-4% है।
- ऑपरेशनल लागत:** संचालन लागत, बुनियादी ढाँचे की कमी, सीमित GVC एकीकरण, अपर्याप्त R&D व्यय जैसी चुनौतियाँ भारत के प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित करती हैं।

सिफारिशें

- ऑपरेशनल व्यय (Opex) समर्थन:** विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाने के लिए टूलिंग, डाइस और बुनियादी ढाँचे पर पूँजीगत व्यय (Capex) पर ध्यान केंद्रित करना।

- कौशल विकास:** वृद्धि को बनाए रखने के लिए एक प्रतिभा पाइपलाइन बनाने की पहला।
- R&D, IP ट्रांसफर और ब्रांडिंग:** उत्पाद भिन्नता में सुधार के लिए अनुसंधान, विकास, अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडिंग को प्रोत्साहन देना और MSMEs को सशक्त करना।
- क्लस्टर विकास:** सप्लाई चेन को मजबूत करने के लिए R&D और टेस्टिंग केंद्र जैसी सामान्य सुविधाओं के माध्यम से कंपनियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना।
- इंडस्ट्री 4.0 अपनाना:** डिजिटल तकनीकों के एकीकरण और उन्नत विनिर्माण मानकों को प्रोत्साहित करना।
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** संयुक्त उपक्रमों (JVs), विदेशी सहयोग, और मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) को बढ़ावा देना।
- व्यवसाय सुगमता:** नियामक प्रक्रियाओं को सरल बनाना, कार्य घंटे लचीलापन, सप्लायर की खोज और विकास में सुधारा।

आगे की राह

- रिपोर्ट में देश के ऑटोमोटिव घटक उत्पादन को \$145 बिलियन तक बढ़ाने की कल्पना की गई है, जिसमें निर्यात \$20 बिलियन से \$60 बिलियन तक तिगुना होगा।
- इस वृद्धि से लगभग \$25 बिलियन का व्यापार अधिशेष और वैश्विक ऑटोमोटिव वैल्यू चेन में भारत की हिस्सेदारी 3% से बढ़कर 8% होने की संभावना है।
- इसके अतिरिक्त, इस वृद्धि से 2-2.5 मिलियन नई रोजगार अवसर सृजित होने की संभावना है।

निष्कर्ष

- भारत के पास ऑटोमोटिव उद्योग में एक वैश्विक नेता बनने की पर्याप्त क्षमता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों और उद्योग के हितधारकों द्वारा केंद्रित प्रयासों की आवश्यकता है।
- वर्तमान चुनौतियों को हल करके और प्रस्तावित हस्तक्षेपों का लाभ उठाकर, भारत अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है, निवेश आकर्षित कर सकता है तथा एक मजबूत ऑटोमोटिव क्षेत्र का निर्माण कर सकता है जो वैश्विक वैल्यू चेन का नेतृत्व करने में सक्षम हो।

Source: AIR

भारत ने बांग्लादेश के निर्यात के लिए ट्रांसशिपमेंट समाप्त किया

संदर्भ

- भारत ने औपचारिक रूप से वह ट्रांसशिपमेंट सुविधा रद्द कर दी है, जो बांग्लादेश को भारतीय भूमि सीमा शुल्क स्टेशन, बंदरगाह और हवाई अड्डों के माध्यम से तीसरे देशों में सामान निर्यात करने की अनुमति देती थी।

ट्रांसशिपमेंट समझौता

- परिचय:** भारत के केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (CBIC) द्वारा 2020 में पेश किया गया, यह समझौता क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और व्यापार सहयोग को बढ़ावा देने के लिए था।
- व्यवस्था:** इस व्यवस्था के तहत बांग्लादेश का माल भारतीय भूमि सीमा शुल्क स्टेशन (LCSs) से होकर बंदरगाहों और हवाई अड्डों तक पहुँच सकता था।
- लाभ:** यह बांग्लादेशी निर्यात के लिए जैसे यूरोप, पश्चिम एशिया आदि क्षेत्रों में व्यापार प्रवाह को सुगम बनाता था।

रद्द क्यों किया गया?

- भारत ने इस सुविधा को रद्द करने का प्रमुख कारण लॉजिस्टिक चुनौतियों को बताया।
- ट्रांसशिपमेंट व्यवस्था के कारण भारतीय हवाई अड्डों और बंदरगाहों पर 'महत्वपूर्ण भीड़' हो रही थी।
- इस भीड़ के कारण विलंब, लागत में वृद्धि और बैकलॉग हुए, जिससे भारत के अपने निर्यात प्रक्रियाएँ बाधित हुईं।
- इस कदम का बांग्लादेश के व्यापार लॉजिस्टिक्स और लागत, विशेष रूप से पश्चिमी बाजारों के लिए निर्यात पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की संभावना है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों की मुख्य विशेषताएँ

- स्वतंत्रता और मुक्ति युद्ध:** भारत ने 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, पाकिस्तानी शासन के विरुद्ध बंगाली राष्ट्रवादी आंदोलन का समर्थन किया।
 - इस ऐतिहासिक घटना ने मजबूत द्विपक्षीय संबंधों की नींव रखी।
- भूमि सीमा समझौता (LBA):** 2015 में, दोनों देशों ने एन्क्लेव का आदान-प्रदान करके और उनकी अंतर्राष्ट्रीय

सीमा को सरल बनाकर लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवादों को सुलझाया, जो 1947 के विभाजन के बाद से अनसुलझे थे।

कनेक्टिविटी:

- भारत और बांग्लादेश के बीच 1965 से पूर्व के पाँच रेल लिंक को पुनर्जीवित किया गया है।
- वर्तमान में दोनों देशों के बीच तीन रेलगाड़ियाँ चल रही हैं – मैत्री एक्सप्रेस, बंधन एक्सप्रेस और मिटाली एक्सप्रेस।
- अखुरा-अगरतला सीमा पार रेल लिंक का उद्घाटन भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को बांग्लादेश के साथ जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आर्थिक संबंध:

- बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है, और भारत एशिया में बांग्लादेश का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है।
- FY24 में कुल व्यापार कारोबार US\$ 12.90 बिलियन तक पहुँचा।
- FY24 में भारत का बांग्लादेश को निर्यात US\$ 11.06 बिलियन रहा।

व्यापार समझौते:

- दोनों देश विभिन्न क्षेत्रीय व्यापार समझौतों जैसे एशिया प्रशांत व्यापार समझौता (APTA), SAARC प्राथमिकता व्यापार समझौता (SAPTA) और दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFTA) के सदस्य हैं, जो व्यापार के लिए टैरिफ व्यवस्था को नियंत्रित करते हैं।

क्षेत्रीय सहयोग:

- दोनों देश क्षेत्रीय संगठनों जैसे SAARC (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ) और BIMSTEC (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल) के सक्रिय सदस्य हैं, जो क्षेत्रीय एकीकरण और सहयोग को बढ़ावा देते हैं।
- दोनों देशों के बीच विभिन्न संयुक्त अभ्यास होते हैं:
 - सम्प्रति अभ्यास (सेना) और
 - मिलन अभ्यास (नौसेना)।
- ऊर्जा क्षेत्र में, बांग्लादेश भारत से लगभग 2,000 मेगावाट विद्युत आयात करता है।

चुनौतियाँ

- सीमा मुद्दे:**
 - 2015 के भूमि सीमा समझौते ने कई लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवादों को सुलझा दिया, लेकिन सीमा सुरक्षा और अवैध क्रॉसिंग से संबंधित मुद्दे अभी भी कभी-कभी संबंधों को तनावपूर्ण बनाते हैं।
- जल विभाजन:**
 - सामान्य नदियों, जैसे तीस्ता नदी, के जल विभाजन पर विवाद अभी भी अनसुलझे हैं।
- व्यापार असंतुलन:**
 - जबकि भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई है, भारत बांग्लादेश से जितना आयात करता है उससे अधिक निर्यात करता है।
 - इसने आर्थिक तनाव और संरक्षणवादी उपायों को जन्म दिया है।
- सीमा पार प्रवास और जनसांख्यिकी परिवर्तन:**
 - बांग्लादेश से असम और पश्चिम बंगाल जैसे भारतीय राज्यों में ऐतिहासिक और अप्रलेखित प्रवास एक राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दा बना हुआ है।
- सुरक्षा चिंताएँ:**
 - सीमा सुरक्षा, सीमा पार तस्करी और उग्रवादी समूहों के साथ होने वाली घटनाओं से संबंधित मुद्दे दोनों देशों के लिए सुरक्षा चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं, जिसके लिए सतत सहयोग और निगरानी आवश्यक है।
- बांग्लादेश में चीन का बढ़ता प्रभाव:**
 - बांग्लादेश का चीन के साथ संबंध गहरा होना, विशेष रूप से बुनियादी ढाँचा और रक्षा में, भारत के लिए एक रणनीतिक चिंता है।
 - भारत इसे अपनी रणनीतिक जगह के संभावित कमज़ोर पड़ने के रूप में देखता है।

आगे की राह

- भारत बांग्लादेश को दक्षिण एशिया में एक महत्वपूर्ण सहयोगी मानता है, जिसके साथ इसकी सभी पड़ोसियों के बीच सबसे लंबी भूमि सीमा साझा है।
- वर्षों से, भारत और बांग्लादेश ने एक बहुआयामी संबंध बनाए हैं, जो साझा इतिहास, संस्कृति और भौगोलिक निकटता से चिह्नित हैं।

- संवाद को बढ़ावा देकर, समावेशिता को बढ़ावा देकर, और साझेदारी को विविध बनाकर, वे मजबूत एवं अधिक स्थायी द्विपक्षीय संबंधों का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

Source: BS

भारतीय रेशम का जादू

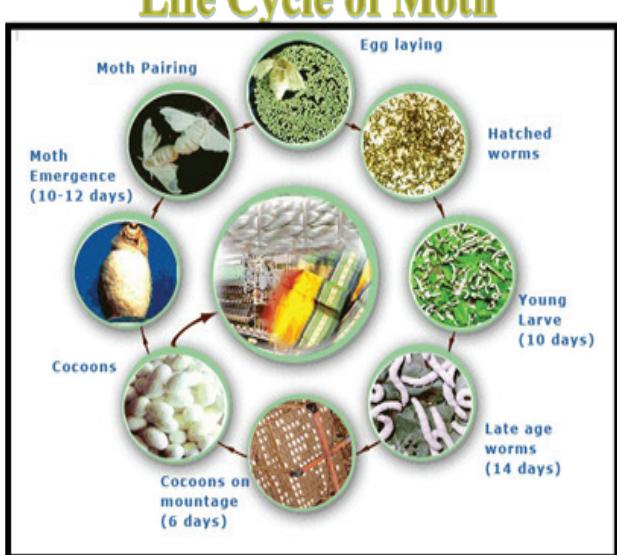
संदर्भ

- भारत का कच्चा रेशम उत्पादन 2017-18 में 31,906 मीट्रिक टन से बढ़कर 2023-24 में 38,913 मीट्रिक टन हो जाएगा।

रेशम उत्पादन क्या है?

- रेशम उत्पादन रेशम के कीड़ों को पालने की प्रक्रिया है, जिससे रेशम बनता है।
- रेशम के कीड़ों को शहतूत, ओक, अरंडी और अर्जुन के पत्तों पर पाला जाता है। लगभग एक महीने के बाद, वे कोकून बनाते हैं।
- रेशम को नरम करने के लिए इन कोकूनों को एकत्रित करके उबाला जाता है। फिर रेशम के धागों को बाहर निकाला जाता है, उन्हें मोड़कर सूत बनाया जाता है और कपड़े में बुना जाता है।

- रेशम विश्व के कुल कपड़ा उत्पादन का केवल 0.2% है।
- भारत चार प्रकार के प्राकृतिक रेशम का उत्पादन करता है: शहतूत, एरी, तसर और मूंगा।
- रेशम उत्पादक राज्य:** कर्नाटक भारत का सबसे बड़ा रेशम उत्पादक राज्य है, इसके बाद आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश हैं।
- रेशम और रेशम के सामान का निर्यात 2017-18 में ₹1,649.48 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में ₹2,027.56 करोड़ हो गया।
- वाणिज्यिक खुफिया और सांख्यिकी महानिदेशालय (DGCIS) की रिपोर्ट के अनुसार, देश ने 2023-24 में 3348 मीट्रिक टन रेशम अपशिष्ट का निर्यात किया।
 - रेशम अपशिष्ट में उत्पादन प्रक्रिया से बचा हुआ या अपूर्ण रेशम होता है, जैसे टूटे हुए रेशे या कोकून के टुकड़े।



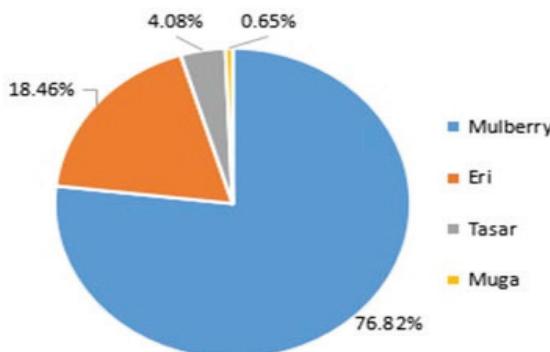
भारत में रेशम उत्पादन

- भारत विश्व स्तर पर रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है।

शहतूत बनाम गैर-शहतूत रेशम

- शहतूत रेशम रेशम के कीड़ों से आता है जो केवल शहतूत के पत्ते खाते हैं।
 - यह मुलायम, चिकना और चमकदार होता है, जो इसे लाजरी साड़ियों और हाई-एंड कपड़ों के लिए एकदम सही बनाता है।
 - देश के कुल कच्चे रेशम उत्पादन का 92% शहतूत से आता है।
- गैर-शहतूत रेशम** (जिसे वान्या रेशम भी कहा जाता है) जंगली रेशम के कीड़ों से आता है जो ओक, अरंडी और अर्जुन जैसे पेड़ों की पत्तियों पर भोजन करते हैं।
 - इस रेशम में कम चमक के साथ एक प्राकृतिक, मृदा जैसा होता है लेकिन यह मजबूत, सतत और पर्यावरण के अनुकूल होता है।

Share of silk type in India's total silk production (2023-24)



Source: Central Silk Board of India, Ministry of Textiles

रेशम विकास में सरकारी पहल

- रेशम समग्र योजना: इसका उद्देश्य देश में रेशम उत्पादन की विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार करके उत्पादन को बढ़ाना और दलित, गरीब और पिछड़े परिवारों को सशक्त बनाना है।
- इसके चार प्रमुख घटक हैं:
 - अनुसंधान एवं विकास, प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और आईटी पहल,
 - बीज संगठन,
 - समन्वय एवं बाजार विकास और
 - गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली / निर्यात ब्रांड संवर्धन और प्रौद्योगिकी उन्नयन।
- पूर्वोत्तर राज्यों में रेशम उत्पादन विकास: इस योजना का उद्देश्य राज्य में रेशम उत्पादन का पुनरुद्धार, विस्तार और विविधीकरण करना था, जिसमें एरी एवं मूंगा रेशम पर विशेष ध्यान दिया गया था।

भारतीय रेशम निर्यात संवर्धन परिषद्

- भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा प्रायोजित ISEPC निर्यातकों, निर्माताओं और व्यापारियों का एक शीर्ष निकाय है।
- परिषद की मुख्य गतिविधियाँ बाजारों की खोज करना, संभावित खरीदारों के साथ संपर्क स्थापित करना, क्रेता-विक्रेता बैठकें, रेशम मेले एवं प्रदर्शनियाँ आयोजित करना, व्यापार विवादों को सुलझाना और भारतीय रेशम उद्योग और निर्यात को बढ़ावा देना तथा विकसित करना है।

Source: PIB

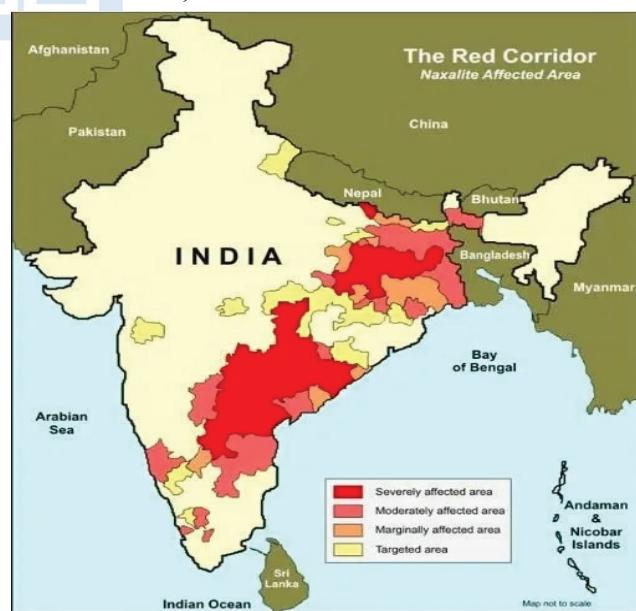
नक्सलमुक्त भारत अभियान: रेड जोन से विकास गलियारों तक

संदर्भ

- भारत ने वामपंथी उग्रवाद पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण प्रगति की है, प्रभावित जिलों, हिंसा और नक्सली उपस्थिति में भारी गिरावट आई है।

नक्सलवादी आंदोलन क्या है?

- उत्पत्ति:** नक्सलवादी आंदोलन की शुरुआत 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी में एक कट्टरपंथी वामपंथी विद्रोह के रूप में हुई थी, जो आदिवासी और भूमिहीन समुदायों के अधिकारों का समर्थन करता था।
- भौगोलिक विस्तार:** उग्रवाद तथाकथित लाल गलियारों में फैल गया, जिसमें छत्तीसगढ़, झारखण्ड, ओडिशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और केरल के कुछ हिस्से शामिल थे।
- अपनाई गई रणनीति:** नक्सली गुरिल्ला युद्ध का उपयोग करते हैं, राज्य की संस्थाओं को निशाना बनाते हैं, स्थानीय जनसंख्या से जबरन वसूली करते हैं और प्रायः बच्चों की भर्ती करते हैं।
 - वे हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए लड़ने का दावा करते हैं, लेकिन हिंसक तरीकों का सहारा लेते हैं।



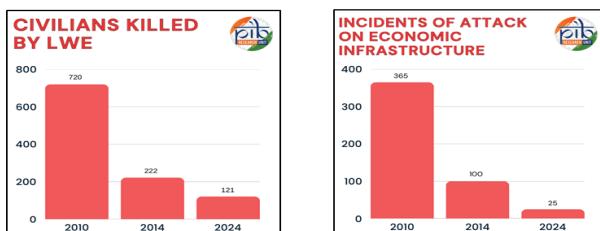
नक्सलवाद के परिणाम

- राजनीतिक परिणाम:** यह राज्य के अधिकार को कमजोर करता है और प्रभावित क्षेत्रों में लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करता है।

- यह शासन में शून्यता भी उत्पन्न करता है, जिससे प्रशासन और कानून प्रवर्तन बेहद मुश्किल हो जाता है।
- आर्थिक परिणाम:** नक्सलवाद कृषि और बुनियादी ढाँचे के विकास जैसी आर्थिक गतिविधियों को बाधित करता है।
 - सुरक्षा पर सरकारी व्यय बढ़ता है, विकास के लिए उपलब्ध धन को कम करता है और निजी निवेश को बाधित करता है।
- सामाजिक परिणाम:** यह हाशिए के समुदायों में भय, अविश्वास और अलगाव की भावना को बढ़ावा देता है।
 - विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के विघटन से मानव विकास में महत्वपूर्ण हानि होता है।

नक्सलवाद के विरुद्ध भारत की लड़ाई में सुधार

- 2010 में प्रभावित जिलों की संख्या 126 से घटकर 2024 में मात्र 38 रह गई है, जो वामपंथी उग्रवाद क्षेत्रों पर सफलतापूर्वक नियंत्रण दर्शाता है।
- हिसा में कमी:** वामपंथी उग्रवाद से संबंधित हिंसक घटनाओं में 81% की कमी आई है, जो 2010 में 1,936 से घटकर 2024 में 374 हो गई है।
- मुख्यधारा में पुनः एकीकरण:** वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, संपर्क और शासन में सुधार हो रहा है।
 - विगत 10 वर्षों में 8,000 से अधिक नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है।



सरकारी पहल

- सुरक्षा संबंधी व्यय योजना:** इस योजना को छत्र योजना 'पुलिस बलों के आधुनिकीकरण' की उप-योजना के रूप में कार्यान्वित किया जा रहा है।
 - केंद्र सरकार वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित जिलों और निगरानी के लिए निर्धारित जिलों के लिए सुरक्षा संबंधी व्यय की प्रतिपूर्ति करती है।

- समाधान रणनीति:** स्मार्ट नेतृत्व, आक्रामक रणनीति, प्रेरणा और प्रशिक्षण, कार्बाई योग्य खुफिया जानकारी, डैशबोर्ड-आधारित केपीआई एवं केआरए, प्रौद्योगिकी का उपयोग, प्रत्येक थिएटर के लिए कार्य योजना और वित्तपोषण तक पहुँच न होने से जुड़ा एक व्यापक दृष्टिकोण।
- किलेबंद पुलिस स्टेशनों की योजना:** विगत 10 वर्षों में वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में 612 किलेबंद पुलिस स्टेशनों का निर्माण किया गया है।
- आकांक्षी जिला:** गृह मंत्रालय को वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित 35 जिलों में आकांक्षी जिला कार्यक्रम की निगरानी का कार्य सौंपा गया है।
- केंद्रित विकास सहायता:** सबसे अधिक प्रभावित जिलों के लिए ₹30 करोड़ और चिंता वाले जिलों के लिए ₹10 करोड़ की विशेष केंद्रीय सहायता बुनियादी ढाँचे की कमी को पूरा कर रही है।

आगे की राह

- सामुदायिक सहभागिता:** विश्वास-निर्माण उपायों को बढ़ावा देना और जनजातीय संस्थाओं को सशक्त बनाना।
- रोजगार और शिक्षा:** भर्ती शृंखला को तोड़ने के लिए युवाओं को कौशल, शिक्षा और नौकरी के अवसर प्रदान करना।
- तकनीकी एकीकरण:** आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करके खुफिया जानकारी, निगरानी और संचार को बढ़ाना।

निष्कर्ष

- भारत सरकार ने 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद को समाप्त करने का लक्ष्य रखा है, तथा इसे आदिवासी और दूरदराज के क्षेत्रों के विकास में एक बड़ी बाधा माना है।
- नक्सलमुक्त भारत अभियान की सफलता मजबूत सुरक्षा और समावेशी विकास के बीच संतुलन बनाने में निहित है।
- निरंतर राजनीतिक इच्छाशक्ति, प्रशासनिक दक्षता और स्थानीय भागीदारी के साथ वामपंथी उग्रवाद से मुक्त भविष्य की प्राप्ति संभव है।

Source: PIB

संक्षिप्त समाचार

नवकार महामंत्र दिवस

संदर्भ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नवकार महामंत्र दिवस का उद्घाटन किया और इसमें भाग लिया।

परिचय

- प्रधानमंत्री ने नवकार मंत्र पर आधारित नौ संकल्प प्रस्तावित किए, जो ज्ञान, कर्म, सद्व्यवहार और प्रगतिशीलता के प्रति प्रतिबद्धता हैं।

- पानी बचाना,
- अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाना,
- स्वच्छता को बढ़ावा देना,
- स्थानीय उत्पादों के लिए मुखर होना,
- ‘देश दर्शन’ के माध्यम से राष्ट्रीय गर्व की भावना को बढ़ावा देना,
- प्राकृतिक खेती के तरीकों को अपनाना,
- स्वस्थ जीवन शैली अपनाना,
- योग और खेलों में भागीदारी को प्रोत्साहित करना,
- गरीबों की सहायता करना।

विश्व नवकार महामंत्र दिवस क्या है?

- यह एक वार्षिक आयोजन है जो 9 अप्रैल को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य नवकार मंत्र - जैन धर्म की सबसे पूजनीय प्रार्थना - के सामूहिक उच्चारण के माध्यम से वैश्विक शांति, अहिंसा और आध्यात्मिक सद्व्यवहार को बढ़ावा देना है।
- यह मंत्र पाँच सर्वोच्च व्यक्तियों: अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सभी साधुओं का सम्मान करता है, जो जैन दर्शन के मुख्य मूल्यों को व्यक्त करते हैं। इस दिन को व्यक्तिगत और वर्चुअल सामूहिक उच्चारण सत्रों के माध्यम से मनाया जाता है।

जैन धर्म

- यह एक आध्यात्मिक मार्ग है जो अहिंसा, सत्य, आत्म-अनुशासन और व्यक्तिगत प्रयास के माध्यम से मोक्ष (मुक्ति) की खोज पर केंद्रित है।

- शब्द ‘जैन’ संस्कृत शब्द ‘जिन’ से लिया गया है, जिसका अर्थ है ‘विजेता’, अर्थात्, जुनून और इच्छा का विजेता।
- अंतिम तीर्थकर महावीर को जिन कहा जाता है क्योंकि उन्होंने सर्वोच्च प्राप्ति के बाद अपने जुनून को जीता।
- जैन धर्म बाद में दो संप्रदायों में विभाजित हुआ: दिगंबर (वायु-वस्त्रधारी) और श्वेतांबर (श्वेत-वस्त्रधारी)।
- बिंबिसार और अजातशत्रु जैसे राजाओं ने जैन धर्म अपनाया, और उनकी संरक्षकता में जैन कला, वास्तुकला और साहित्य का विकास हुआ।

Source: PIB

डी.आर. कांगो

संदर्भ

- संयुक्त राष्ट्र ने पूर्वी डी.आर. कांगो में बच्चों के साथ बड़े पैमाने पर हो रहे बलात्कार की निंदा की, जहाँ 2025 की शुरुआत में हजारों लोगों को यौन हिंसा का सामना करना पड़ा।

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC)

- यह मध्य अफ्रीका में स्थित एक देश है। यह क्षेत्रफल की दृष्टि से अफ्रीका का दूसरा सबसे बड़ा देश है।



- किंशासा राजधानी शहर है, जो कांगो नदी पर स्थित है, और अफ्रीका के सबसे बड़े शहरी क्षेत्रों में से एक है।
- सीमावर्ती देश:** अंगोला, बुरुंडी, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, कांगो गणराज्य, रवांडा, दक्षिण सूडान, तंजानिया, युगांडा और जाम्बिया।
- यह असाधारण प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है, जिसमें कोबाल्ट और तांबा जैसे खनिज, जलविद्युत क्षमता, महत्वपूर्ण कृषि योग्य भूमि, अपार जैव विविधता एवं विश्व का दूसरा सबसे बड़ा वर्षावन शामिल है।

Source :TH

ओडिशा एकीकृत स्वास्थ्य बीमा योजना प्रारंभ करेगा

संदर्भ

- ओडिशा सरकार ने आयुष्मान भारत और 'गोपबंधु जन आरोग्य योजना' को मिलाकर एक एकीकृत स्वास्थ्य कवरेज योजना प्रारंभ की।

परिचय

- इस योजना के अंतर्गत प्रति वर्ष प्रत्येक परिवार को 5 लाख रुपये का स्वास्थ्य कवरेज प्रदान किया जाएगा, साथ ही महिला सदस्यों के लिए अतिरिक्त 5 लाख रुपये का कवरेज दिया जाएगा।
- आयुष्मान वयो-वर्द्धन योजना के तहत, 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी व्यक्ति, चाहे उनकी आय कुछ भी हो, कवरेज के लिए पात्र होंगे।

आयुष्मान भारत योजना

- इसे भारत सरकार द्वारा सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज प्राप्त करने के उद्देश्य से 2018 में लॉन्च किया गया था। इसके दो प्रमुख घटक हैं:
 - आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री-जन आरोग्य योजना (AB PM-JAY)
 - आयुष्मान आरोग्य मंदिर

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री-जन आरोग्य योजना (AB PM-JAY)

- AB PM-JAY विश्व की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित स्वास्थ्य आश्वासन योजना है, जो द्वितीयक और तृतीयक देखभाल अस्पताल में भर्ती होने के लिए प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख रुपये का स्वास्थ्य कवर प्रदान करती है।
- कवरेज: इसमें अस्पताल में भर्ती होने से पहले के 3 दिन और अस्पताल में भर्ती होने के बाद के 15 दिन जैसे निदान और दवाइयों का व्यय सम्मिलित है।
 - लाभार्थी भारत में किसी भी सूचीबद्ध सार्वजनिक या निजी अस्पताल में जाकर कैशलेस उपचार प्राप्त कर सकता है।
 - परिवार के आकार, आयु या लिंग पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

- पात्रता:** परिवारों का समावेश क्रमशः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना 2011 के अभाव और व्यावसायिक मानदंडों पर आधारित है।

- इस संख्या में वे परिवार भी शामिल हैं जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना में शामिल थे, लेकिन SECC 2011 डेटाबेस में मौजूद नहीं थे।

- वित्त पोषण:** इस योजना के लिए वित्त पोषण केंद्र और राज्य द्वारा 60:40 के अनुपात में साझा किया जाता है।
 - हालाँकि, पूर्वोत्तर राज्यों, हिमालयी राज्यों (जैसे उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश) और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए यह अनुपात 90:10 है।

गोपबंधु जन आरोग्य योजना 2025

- यह योजना ओडिशा राज्य के उन नागरिकों को स्वास्थ्य सेवा सुविधाएँ प्रदान करती है जो इसका व्यय वहन नहीं कर सकते।
 - योजना के अंतर्गत चुने गए सभी राज्य नागरिकों को ग्रामीण क्षेत्रों में 5 लाख रुपये और शहरी क्षेत्रों में 6 लाख रुपये तक की मुफ्त स्वास्थ्य सेवा मिलेगी।

Source: AIR

मॉरीशस ने ISA के देश साझेदारी ढाँचे पर हस्ताक्षर किए

संदर्भ

- मॉरीशस अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के साथ देश साझेदारी रूपरेखा पर हस्ताक्षर करने वाला प्रथम अफ्रीकी देश बन गया है।

परिचय

- यह भी बांग्लादेश, भूटान और क्यूबा के बाद सीपीएफ पर हस्ताक्षर करने वाला विश्व का चौथा देश है। यह साझेदारी आईएसए और मॉरीशस के बीच सौर ऊर्जा पहलों पर सहयोग के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करने का लक्ष्य रखती है, जो देश की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ मेल खाता है।

- सीपीएफ यह एक रणनीतिक पहल है जिसे आईएसए द्वारा अपने सदस्य देशों के साथ दीर्घकालिक और मध्यम-कालिक सहयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए विकसित किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)

- परिचय:** यह एक संधि-आधारित अंतर-सरकारी संगठन है, जिसे 2015 में भारत और फ्रांस द्वारा COP21 शिखर सम्मेलन में प्रारंभ किया गया था।
- उद्देश्य:** ऊर्जा पहुँच और जलवायु परिवर्तन के लिए सौर ऊर्जा को एक सतत समाधान के रूप में बढ़ावा देना, जिसका लक्ष्य 2030 तक सौर निवेश में 1 ट्रिलियन अमरीकी डालर एकत्रित करना है।
- सदस्य:** वर्तमान में 100+ देश हस्ताक्षरकर्ता हैं, जिनमें से 90+ देशों ने पूर्ण सदस्य बनने के लिए अनुमोदन किया है।
- फोकस:** प्रारंभ में विकासशील देशों पर केंद्रित, आईएसए के ढाँचा समझौते को 2020 में संशोधित किया गया ताकि सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों को शामिल किया जा सके।
- मुख्यालय:** गुरुग्राम, भारत में स्थित, आईएसए भारत में स्थापित पहला अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।

Source: AIR

पूँजी निवेश योजना के लिए राज्यों को विशेष सहायता

संदर्भ

- विधानसभा वाले केंद्र शासित प्रदेश - दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, पुडुचेरी - अब 2020-21 में प्रारंभ की गई 'पूँजी निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता' योजना के अंतर्गत शामिल हैं।

योजना की मुख्य विशेषताएँ:

- इस योजना के तहत, केंद्र सरकार पूँजी निवेश परियोजनाओं के लिए 50 वर्ष के ब्याज मुक्त क्रण के रूप में राज्यों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- सड़क, फ्लाईओवर, पुल, अस्पताल भवन, पर्यटन क्षेत्रों के विकास और अन्य पूँजी परियोजनाओं जैसी बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं के लिए प्रावधान किए गए हैं।

- इसे COVID-19 महामारी के कारण राज्य सरकारों के सामने आने वाले कठिन राजकोषीय वातावरण को देखते हुए लॉन्च किया गया था।
- योजना को वित्तीय वर्ष 2021-22, 2022-23 और 2023-24 में और आगामी वित्त वर्ष 2024-25 में जारी रखा गया।

Source: IE

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

संदर्भ

- औद्योगिक उत्पादन सूचकांक छह माह में सबसे धीमी दर से बढ़ा, फरवरी 2025 में 2.9% की गति से बढ़ा।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

- IIP एक सूचकांक है जो एक निश्चित अवधि में अर्थव्यवस्था के विभिन्न उद्योग समूहों में वृद्धि दर को दर्शाता है।
- यह एक समग्र संकेतक है जो निम्न के अंतर्गत वर्गीकृत उद्योग समूहों की वृद्धि दर को मापता है:
 - व्यापक क्षेत्र:** खनन, विनिर्माण और बिजली।
 - उपयोग आधारित क्षेत्र:** बुनियादी सामान, पूँजीगत सामान और मध्यवर्ती सामान।
- केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO), सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी किया गया।
- आधार वर्ष:** 2011-2012
- आवधिकता:** मासिक आधार

Source: TH

कवच 5.0 प्रणाली

समाचार में

- रेल मंत्रालय ने मुंबई की उपनगरीय ट्रेन सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए कवच 5.0 को लागू करने की घोषणा की।

कवच प्रणाली

- भारतीय रेलवे ने मानव त्रुटियों के कारण होने वाली सिग्नल पासिंग एट डेंजर और अति-गति की वजह से होने वाले दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एक स्वदेशी

स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली विकसित की है, जिसे 'कवच' (ट्रेन टक्कर बचाव प्रणाली) का नाम दिया गया है।

- यह एक अत्यधिक तकनीकी गहन प्रणाली है, जिसे उच्चतम स्तर की सुरक्षा प्रमाणन (SIL-4) की आवश्यकता होती है।
- यह लोको पायलट को निर्दिष्ट गति सीमा के अन्दर ट्रेन चलाने में सहायता प्रदान करता है।
- यदि लोको पायलट ब्रेक लगाने में विफल रहता है, तो यह स्वचालित रूप से ब्रेक लगाता है और खराब मौसम के दौरान ट्रेन को सुरक्षित रूप से चलाने में सहायता करता है।

प्रगति

- फरवरी 2016 में यात्री ट्रेनों पर पहली क्षेत्र परीक्षण प्रारंभ किया गया था।
- प्राप्त अनुभव और स्वतंत्र सुरक्षा मूल्यांकनकर्ता (ISA) द्वारा प्रणाली के स्वतंत्र सुरक्षा आकलन के आधार पर, 2018-19 में कवच संस्करण 3.2 की आपूर्ति के लिए तीन कंपनियों को मंजूरी दी गई।
- जुलाई 2020 में कवच को राष्ट्रीय स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (ATP) प्रणाली के रूप में अपनाया गया।
- कवच संस्करण 4.0 में विविध रेलवे नेटवर्क के लिए आवश्यक सभी प्रमुख सुविधाएँ शामिल हैं।

कवच 5.0

- यह एक उन्नत स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (ATP) प्रणाली है, जिसे विशेष रूप से मुंबई के लिए डिजाइन किया गया है और दिसंबर 2025 तक पूरा किया जाएगा।
- यह ट्रेन की आवृत्ति को 30% तक बढ़ाने की उम्मीद है, जिससे ट्रेनों के बीच अंतराल कम हो जाएगा।
 - इसका उद्देश्य 80 लाख दैनिक यात्रियों को अधिक आरामदायक तरीके से समायोजित करना है।

Source :IE

'गौरव' (बम)

समाचार में

- DRDO ने Su-30 MKI विमान से लंबी दूरी की ग्लाइड बम 'गौरव' के रिलीज परीक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया।

लंबी दूरी की ग्लाइड बम (LRGB) 'गौरव'

- LRGB 'गौरव' 1,000 किलोग्राम वर्ग का ग्लाइड बम है।
- यह एक सटीक-निर्देशित, लंबी दूरी की ग्लाइड बम है जिसे स्टैंड-ऑफ दूरी से, अर्थात् शत्रु वायु रक्षा सीमा से परे, भूमि लक्ष्यों पर प्रहार करने के लिए विकसित किया गया है।
- इसे स्वदेशी रूप से रिसर्च सेंटर इमारत, आर्मार्मेंट रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट, और इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज चांदीपुर द्वारा डिजाइन और विकसित किया गया है।
- परीक्षणों ने 100 किलोमीटर की सीमा को पिन-पॉइंट सटीकता के साथ सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया।
- घोषित सीमा क्षमता 30 किलोमीटर से 150 किलोमीटर के बीच है।

महत्व: LRGB का विकास सशस्त्र बलों की क्षमताओं को बहुत हद तक बढ़ाएगा।

Source :PIB

मालाबार ग्रे हॉर्नबिल (ओसीसीरोस ग्रिसियस)

संदर्भ

- केरल के शोधकर्ताओं की एक टीम को उनके मलबार ग्रे हॉर्नबिल के संरक्षण परियोजना के लिए संरक्षण नेतृत्व कार्यक्रम (CLP) द्वारा प्यूचर कंजरवेशनिस्ट अवार्ड प्रदान किया गया है।

परिचय

- मलबार ग्रे हॉर्नबिल:** यह एक प्रमुख प्रजाति है, जो भारत के पश्चिमी घाट में स्थानिक है।
- भौतिक विशेषताएँ:**
 - इस पक्षी की पहचान इसके बड़े, मुड़े हुए चौंच से होती है।
 - इसमें प्रमुख कैस्क (सींग-जैसे ढाँचे) की कमी होती है।
 - इसका पंख ग्रे रंग का होता है।

- यह अपनी तेज और विशिष्ट आवाज़ के लिए जाना जाता है।
- **वासस्थान:**
 - यह सदाबहार जंगलों, बागानों (कॉफी, रबर, सुपारी), और अन्य संशोधित आवासों में पाया जाता है।
 - कुछ विशेष स्थानों में शामिल हैं:
 - मुदमलई वन्यजीव अभयारण्य,
 - अन्नामलाई टाइगर रिजर्व,
 - दांडेली राष्ट्रीय उद्यान।

संरक्षण स्थिति

- **IUCN रेड लिस्ट:** संवेदनशील (VU)
- **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 (भारत):** अनुसूची I



Source: TH

